आर्य कन्या इन्टर कालेज, प्रयाग की हीरक जयन्ती के शुभ अवसर
पर प्रकाशित

आ.
पा.क.

प्रथम माला]   ओ३म्   [ट्रैक्ट संख्या

वैदिक धर्म हो विश्व-धर्म

5·3V2

(महर्षि दयानन्द सरस्वती
तथा जगत्-प्रसिद्ध पुरुषों की स्पष्ट घोषणायें)

दुन्दुभि बाज गई !

हिमगिरि से गंगा बहती है
सब दुनियाँ यों ही कहती है
आज किसी ने हरिद्वार में–
गंगा उलट दई।
दुन्दुभि बाज गई।

—स्वामी समर्पणानन्द

लेखक

पं० श्याम किशोर आर्य, सिद्धान्त शास्त्री

प्रकाशक

गंगाप्रसाद उपाध्याय ट्रैक्ट विभाग,
आर्य समाज, चौक, प्रयाग।

प्रति सैकड़ा २५ रु०]   दिसम्बर वर्ष १९८०   [मूल्य ३० पैसे

पूज्य स्व० मोहनलाल जी की स्मृति में श्री वेद प्रिय आर्य
टंकारा ज्योति प्रकाशन, प्रयाग के सौजन्य से

दो शब्द

वेद का अर्थ है ज्ञान । सत् जिसका कभी नाश नहीं होता चित् जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देन वाला परम प्रभु परमात्मा है उसी ने सृष्ट्यादि में मनुष्य को यह दिव्य ज्ञान दिया कि ताकि वे धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की यथावत् सिद्धि कर परमानन्द को प्राप्त कर सकें। वेद सनातन प्रभु की वाणी होने के कारण ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल हैं। यह किसी व्यक्ति विशेष व जाति विशेष को संबोधित न होकर सर्व साधारण के लिये संवोधित है। इसमें न तो सृष्टि-क्रम, विद्या-बुद्धि के विपरीत बातें हैं न ये कुरान, पुराःन, बाइबिल की भाँति लौकिक इतिहास अथवा घटनाओं के वर्णन से युक्त है। वेद की शिक्षायें सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक होने के कारण नित नवीन तथा सार्वजनीन एवं उपादेय है। अतएव ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त ऋषि महर्षि विद्वत् जन इसी से अनुप्राणित होते रहे हैं। पाँच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न कोई मत संसार में न था। वाद के मत मजहब प्रवर्त्तक—बुद्ध, महाबीर, जरथु स्थ, मूसा, ईसा मुहम्मद से लेकर अर्वाचीन नये प्रचारक तक इसी की कुछ एक मूलभूत सचाइयों को लेकर खड़े होने में समर्थ हुये हैं। विद्वान् लेखक प० श्याम किशोर आर्य, सिद्धान्त शास्त्री ने इस लघु पुस्तिका में सप्रमाण यही स्पष्ट करने का प्रयास किया है। आशा है, इस पुस्तिका से जहाँ पाठकों के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी वहीं वेद की ओर उन्मुख होकर उसकी सार्वभौम शिक्षाओं को ग्रहण कर अपना और अपने देश-जाति का कल्याण करेंगे। इत्योम्।

राम निहोरे सिंह
प्रबन्धक
गंगा प्रसाद उपाध्याय ट्रैक्ट विभाग
आर्य समाज चौक, प्रयाग

ओ३म्

वैदिक धर्म हो विश्व-धर्म

(महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा जगत-प्रसिद्ध पुरुषों की घोषणायें)

धर्म, मत, सम्प्रदाय, मजहब एवं रिलीजन (Religicn) शब्द आज पर्याय अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। यह उचित नहीं। धर्म शाश्वत नियम है जिनके पालन के बिना किसी का कल्याण संभव नहीं। जो इसका पालन करेगा वह सुख, आनन्द एवं शांति का अधिकारी होगा। जो उससे विरत होगा वह कभी भी सुख, शान्ति एवं आनन्द नहीं पा सकता।

मत, सम्प्रदाय, मजहब अथवा रिलीजन किसी व्यक्ति विशेष को आदर्श स्वीकार करते हैं, अतएव उनका स्वयं का दोष भी उसमें सम्मिलित रहता है जो उसे एक दल बना कर लोगों को मतवाले कर देता है,

धर्म इन सबसे ऊपर है इसीलिए महर्षि मनु ने कहा है—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्मात् धर्मो न हन्तारो मा नो धर्म हतो वधीत्॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में मत और धर्म की बड़ी अद्भुत विवेचना करते हुये यह घोषणा की है—कि "वैदिक धर्म ही विश्व-धर्म हो सकता है, संसार का कल्याण वैदिक धर्म को स्वीकार करने से होगा।" विवेचना इस प्रकार है—

"देख ! जिस बात में ये सहस्र एक मत हों वह वेदमत ग्राह्य हैं और जिसमें परस्पर विरोध हो वह कल्पित, झूठा, अधर्म अग्राह्य है -

जिज्ञासु--इसकी परीक्षा कैसे हो ?

आप्त—तू जाकर इन-इन बातों को पूछ। सबकी एक सम्मति हो जायेगी। तब वह इन सहस्रों की मंडली के बीच में खड़ा होकर बोला कि सुनो सब लोगों ! सत्य-भाषण में धर्म है वा मिथ्या में ? सब एक स्वर होकर बोले कि सत्य-भाषण में धर्म और असत्य भाषण में अधर्म है। वैसे ही विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ, सत्य व्यवहार आदि में धर्म और अविद्या ग्रहण, ब्रह्मचर्य न करने, व्यभिचार करने, कुसंग, आलस्य, असत्य व्यवहार, छल, कपट, हिंसा, परहानि करने आदि कर्मों में ?

सबने एक मत होके कहा कि विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्यादि के ग्रहण में अधर्म।

तब जिज्ञासु ने सबसे कहा कि तुम इसी प्रकार सब जने एक मत हो सत्य धर्म की उन्नति और मिथ्या मार्ग की हानि क्यों नहीं करते हो ? वे सब बोले--जो हम ऐसा करें तो हमको कौन पूछे ? हमारे चेले हमारी आज्ञा में न रहें। जीविका नष्ट हो जाय। फिर जो हम आनन्द कर रहे हैं सो सब हाथ से जाय।

(सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास पृ० २७७–२७८)

सत्यार्थप्रकाश का उपसंहार करते हुये महर्षि लिखते हैं—

"ऐसे ही अपने-अपने मत वाले सब कहते हैं कि हमारा ही मत अच्छा है, बाकी सब बुरे ! बिना हमारे मत के दूसरे मत में मुक्ति नहीं हो सकती। अब हम तुम्हारी बात को सच्ची माने वा

उनकी ? हम तो यही मानते हैं कि सत्यभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभ-गुण सब मतों में अच्छे हैं और बाकी वादविवाद ईर्ष्या, द्वेष, मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं। यदि तुम को सत्यमत ग्रहण करने की इच्छा हो तो वैदिक मत ग्रहण करो।

(सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास का अन्तिम पदच्छेद)

आगे अपना अभिप्राय प्रकट करते हैं--

जो मत-मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े है उनको, मैं प्रसन्न नहीं करता क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फँसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्वसत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख-लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्व शक्तिमान् परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे। जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।

(सत्यार्थप्रकाश का अन्तिम अनुच्छेद)

वैदिक धर्म के नियम संदेश सर्वथा पालनीय है। वह नित-नवीन हैं सर्वतन्त्र, सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक हैं।

ऋषि दयानन्द से अनुप्राणित स्वामी विवेकानन्द ने इसी बात को अपने शब्दों में कहा है—

"पर यदि कभी कोई सार्वभौमिक धर्म हो सकता है, तो वह ऐसा ही होगा, जो देश-काल से मर्यादित न हो, जो उस अनन्त भगवान के समान ही अनन्त हो, जिस भगवान के सम्बन्ध में वह उपदेश देता है, जिसकी ज्योति श्रीकृष्ण के भक्तों पर,

और ईसा के प्रेमियों पर, संतों पर और पापियों पर समान रूप से प्रकाशित होता हो, जो न तो ब्राह्मणों का हो, न बौद्धों का, न ईसाइयों का, समष्टि स्वरूप होते हुये भी जिसमें उन्नति का अनन्त पथ खुला रहे, जो इतना व्यापक हो कि अपनी असंख्य प्रसारित बाहुओं द्वारा सृष्टि के प्रत्येक मनुष्य का आलिंगन करे और उसे अपने हृदय में स्थान दे, चाहे वह मनुष्य हिंसक पशु से किंचित ही उठा हो, अथवा अपने मस्तिष्क और हृदय के सद्गुणों के कारण मानव समाज से इतना ऊँचा क्यों न उठ गया हो कि लोग उसको मानवी प्रकृति में शंका करते हुये देवता के समान उसकी पूजा करते हों।

वह विश्व धर्म ऐसा होगा कि उसमें अविश्वासियों पर अत्याचार करने या उनके प्रति असहिष्णुता प्रकट करने की नीति नहीं रहेगी, वह धर्म प्रत्येक स्त्री और पुरुष के ईश्वरीय स्वरूप को स्वीकार करेगा, और उसका संपूर्ण बल मनुष्य मात्र को अपनी सच्ची, ईश्वरी प्रकृति का साक्षात्कार करने के लिये सहायता देने में ही केन्द्रित रहेगा।

आप ऐसे सार्वभौमिक उदार धर्म को सामने रखिये, और सारे राष्ट्र आपके अनुयायी बन जायेंगे।

(विवेकानन्द--शिकागो वक्तृता पृ० ४०--४१)

एक अन्य स्थल पर कहा है--

"सार्वजनिक धर्म की व्याख्या करने वाला एक मात्र वेद ही है।"

(विवेकानन्द—चिन्तनीय बातें पृ० ३८)

विश्व में गीतमयी वाणी के प्रवाह-पूर्ण वक्ता भारतीय संस्कृति के प्रसारक मस्त भक्त संत स्वामी रामतीर्थ ने जापान में सभ्यों के समक्ष इसी प्रकार भावव्यक्त किया है :

“अपने विचारों की स्वतन्त्रता बुद्ध, ईसा, मुहम्मद या कृष्ण के हाथ मत बेचो।”

(सफलता की कुंजी पृ० २८)

‘ मैं आपको उस धर्म का संदेश दे रहा हूँ जो गली-गली में मौजूद है, जो पत्ते-पत्ते पर अंकित है, जो झरने की ध्वनि में गूँज रहा है, जो समीर की सरसराहट में सुनाई पड़ता है जो आपकी धमनियों और शिराओं में धड़क रहा है, वह धर्म जो आपके व्यापार और हृदय से सम्बन्ध रखता है, वह धर्म जिसका पालन करने के लिए किसी चर्च या मन्दिर विशेष में जाना भर काफी नहीं है, एक ऐसा धर्म जिसे आप अपने दैनिक जीवन में पायेंगे और उसका पालन करेंगे अपने रसोईघर में, अपनी बैठक में, अपने प्रत्येक कार्य क्षेत्र में आप उस धर्म के अनुसार जीवन बितायेंगे।

आप चाहे तो इसे वेदान्त न कहिये, इसे कोई नया नाम दे दीजिये। वेदान्त का अर्थ है मूल भूत सत्य। सत्य सिर्फ मेरा नहीं आपका भी है।”

(सफलता की कुंजी पृ० ३१)

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति जग विख्यात दार्शनिक सर्वपल्ली राधाकृष्णन महोदय ने विश्व धर्म की कल्पना इन शब्दों में की है—

भारत के रहस्यवादी धर्म की ही नये विश्व का धर्म बनने की संभावना है, जो सब मनुष्यों को राष्ट्रीय सीमाओं के पार भी एक सांझे केन्द्र की ओर खींच सकेगा, भारत के इस रहस्यवादी धर्म का कथन है कि आध्यात्मिक वस्तुयें वैयक्तिक है और हमें इन्हें अपने जीवन में प्रतिबिम्बित करना चाहिये, इसके लिये यह आवश्यक है कि हम वास्तविकता को प्राप्त करने के लिये सांसारिक विषयों से विमुख हो जायें और नई ऊर्जा तथा संकल्प के साथ इतिहास के जगत् की ओर लौट पड़े—(वेदों की ओर लौट चलें)

(धर्म और समाज पृ० ५३ अंतिम परिच्छेद)

तर्क-युग (Age of Reason) के विश्वविख्यात चिन्तक और फ्रान्स-क्रान्ति के उज्ज्वल नक्षत्र श्री टामसपेन ने अनेकानेक विवाद के उपरान्त निष्कर्ष निकाला—

"यह निश्चित है कि एक विषय में भूमण्डल के समस्त राष्ट्र तथा धर्म (सम्प्रदाय) सहमत हो जायेंगे। सभी परमात्मा को मानते है। असहमति विरोध का कारण एक ही है अन्ध विश्वास और बुद्धिविहीन बातें।

और इसलिये यदि कभी कोई विश्व धर्म होगा तो वह कोई नया सिद्धान्त नहीं होगा परन्तु अन्ध-विश्वास तथा बुद्धि-विहीन बातों से मुक्त जिसे मानव आदि (आरम्भ) काल में मानता था।

(Age of Reason Page 32)

सत्य अविरोधी एक रूप होता है और वह अन्तःप्रेरणा तथा ईश्वरीय ज्ञान है वही स्वीकार करने योग्य है। यह असम्भव है जिसे स्वीकार किया जाय वह परस्पर विरोधी हो।

(Age of Reason पृ० 69)

मनुष्य को लौटना होगा विशुद्ध, अमिश्रित तथा प्रदूषणहीन एक ईश्वर पर विश्वास करने पर इससे अधिक नहीं।

(Age of Reason, Page 2)

ब्रह्मसमाज के संस्थापक श्री राजाराममोहन राय ने स्वीकार किया—

"वेद न केवल नक्षत्रविद्या (ज्योतिष), औषधि विज्ञान और शास्त्रों की निधि हैं वरन् आचार शास्त्र तथा वास्तविक दार्शनिक रहस्यों तथा समस्त कला और विज्ञान उसमें निहित हैं। जो अन्य शास्त्रों में व्याख्या से है उनका प्रेरणा स्रोत वेद है।"

•(A Deffence of Hindu thiesm, Page 95)

प्रसिद्ध विचारक श्री डब्लू० डी० ब्राउन महोदय ने स्पष्ट लिखा है—

"वैदिक धर्म केवल एकमात्र एकेश्वरवाद को स्वीकारता है। यह नितांत विशुद्ध वैज्ञानिक धर्म है। इसमें विज्ञान और धर्म हाथ से हाथ मिलाकर चलते हैं। यहाँ ईश्वर विषयक सिद्धांत विज्ञान एवं दर्शन के आधार पर हैं।"

(Supperiority of Vedic Religion, Page 89)

आयरलैण्ड के सुप्रसिद्ध कवि और दार्शनिक डाक्टर जेम्स कजिन्स जिन्हें कांग्रेस संस्थापक श्री ह्यूम महोदय और महात्मा गांधी ने भारतीय प्रतीक स्वीकार किया है, उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती का सत्संग पाकर अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं :—

"Vedic ideal alone, with its inclusiveness which absorbs and annihilates the causes of antogonisms, its sampathy which wins hatred away from itself, it is possible to rear a new earth in the image and likeness of the Eternal Heavens."

(Path to Peace, Page 60)

योगीराज अरविन्द ने भी—स्पष्ट भविष्यवाणी की है--

"दयानन्द की इस उक्ति में कुछ भी विचित्रता नहीं है कि वेद में वैज्ञानिक सत्य और धार्मिक सत्य दोनों सम्मिलित हैं। मैं इसके साथ अपनी मान्यता भी जोड़ता हूँ कि वेद में अन्य वैज्ञानिक सत्य भी हैं जिनका अभी तक आधुनिक विज्ञान को भी ज्ञान नहीं है।"

(दयानन्द और वेद)

महात्मा बुद्ध ने संदेश दिया—

विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं ।
न उच्चावचं गच्छति भूरिपंजो ॥

(सुत्त निहत, २९२)

अर्थात् 'भूरिप्रज्ञ विद्वान् वेदों के द्वारा धर्म को प्राप्त करके अस्थिरता को प्राप्त नहीं होता ।'

पारसी धर्म प्रवर्तक महात्मा जरथ्ुस्थ ने स्पष्ट उपदेश दिया–

अत फ्रवक्षया अङ्हुँउश् अह्या वहिश्तँम् ।
अषात् ध्या मज्दा व ए २ दा यँ ईम् दात् ।

(उश्त० गाथा० य० ४५/४/१,२)

अर्थ—अब मैं संसार में सर्वोत्तम सार वेदों के विषय में कहूँगा जिन्हें मज्दा (ईश्वर) ने ह्चा (वैदिक–ऋत महत्) से संयुक्त करके मानवों को प्रदान किया ।

हज़रत रसूल मुहम्मद साहब ने कुरान में बतलाया—

वल् किताबिल् मुवीन् । इन्ना जअलनाहु क़ुरानन् अरवीयन लअल्लकुयाक़्लून, व इन्नहू फी उम्मिल किताबे लदैना ल अलीमुन हकीम ॥

(जुखरुफ पृ० ८८८ आयत २, ३, ४)

अल् किताब (अर्थात् असली क़ुरान) रोशन करने वाली है । हमने इस कुरान को अरवी में इसलिए बना दिया है कि तुम्हारी समझ में आ जाये । वस्तुतः यह सब उम्मुल किताब" (किताबों की माँ अर्थात् लोहे महफ़ूज) में लिखा है । जो हमारे पास है और जिसमें बड़ी हिकमत की चीजे हैं । अर्थात् ये खुली किताब की आयते हैं ॥१॥ हमने इसे अरबी में कुरआन के रूप में उतारा है ताकि तुम समझ सको (और फिर तुम्हारे द्वारा दूसरे लोग समझ सके) ॥२॥ (१२ सूरा यूनुस १, २, पृष्ठ ४३६)

समीक्षा उम्मुल किताब (किताबों की माँ) जो कि वेद है जो खुदा के पास है उसी खुली किताब से लेकर अरबी भाषा में मुहम्मद साहब द्वारा सुनाई जा रही है।

हजरत जिब्राइल उसी खुली किताव से नकल करके वह्य द्वारा मुहम्मद साहव को पढ़ाते थे।

(२) और इसी तरह हमने इस (कुरआन) को अरवी में फरमान बनाकर तुम पर उतारा है।

(१३ अर र-अद ३७ पृ० ४६१)

समीक्षा—वेद का ज्ञान आदि सृष्टि में आदि मानवों को परमात्मा ने दे दिया था।* अल्लम आदमल् अस्माअ कुल्ल हा।। (बकर ३) वह (कुल्लहा) संपूर्ण था। और अरब के लोगों को उनके आवश्यकतानुसार पुनः उसमें से उनकी भाषा में पुनः हजरत मुहम्मद साहब को जिब्राईल वह्य द्वारा बतलाते हैं।

शिया विद्वान यह कहते है कि वर्तमान कुरान शरीफपूर्ण नहीं है इसमें बैत अली तथा अन्य कई आयतें नहीं हैं। उनकी यह भी मान्यता है कि असली कुरान शरीफ हजरत अली के पास है। वर्तमान कुरान तो हजरत उस्मान ने अपनी मर्जी के अनुसार लिखवाया है। इसे वह बयाज उस्मानी कहते है।

कहते हैं पटना में वर्तमान खुदाबख्श लाइब्रेरी जो एशिया की मुस्लिम पुस्तकों की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है उसमें ४० पारे का

---

*वृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत गामधेयं दधानाः
(ऋग्वेद १० सूक्त ७१ मन्त्र १)

सर्वेषां सु नामानि कर्मणि च प्रथक्-प्रथक् वेद शब्देव एवादो पृथक् संस्थाश्च निर्ममे। (मनुस्मृति)

कुरान रखा हुआ है। जिसे श्री खुदाबख्श जी ने कई लाख रुपये खर्च करके ईरान से हासिल किया था। इसे धर्मवीर पं० लेखराम जी ने देखा था और उसमें से उन्होंने कुछ टिप्पणियाँ भी दी थीं।

(समस्त मुस्लिम जगत् की मान्यता है कि सूरये फातहा समस्त कुरान शरीफ का सार है। और यह भी सत्य है कि यजुर्वेद का एक मन्त्र "अग्ने नय सुपथा राये" का यह भावानुवाद हैं।)

सर अल्लामा इकबाल ने स्वीकार किया है—

"वहदत की लय सुनी थी दुनियाँ ने जिस मकाँ से।
मीरे अरब को आई ठण्डी हवा जहाँ के।

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही हैं।
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा॥"

अरब के प्रसिद्ध कवि अल्लाब लावी जो हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से लगभग २४०० वर्ष पूर्व और ईसवी सन् के १७०० वर्ष पूर्व हुये थे जिनकी कविताओं का संग्रह अमीर हारुन रशीद के दरबारी कवि 'अस्माई मलेकुम शरा' ने अपनी दीवान 'सीरुल्उक्कूल' में किया है। इस पुस्तक के पृष्ठ ११८ पर वेद के विषय में लिखा है :—

(१) अया मुबारकल अर्जे योशेय्ये नुहामिनल्।
हिन्दे फ़ाराद कल्ला हो मैय्यो नज्जे ला जिक्तुन॥

(२) वहवल् त जल्लेयतुन् एनाने सहवी अरबातुन्।
हाजही युनज्जेल रसूलो ज़िक़तान मिनल हिन्दतुन्॥

(३) यक़ूलुनल्लाह या अहलल् अर्जे आलमीन कुल्लहुम्।
फ़त्तविऊ जिक़्तुल् वेद हक्कन् मालम् युनज्जे लहुन्॥

(४) वहो वा लस् उस् साम वल युज़र मिनल्लहे तन् जीलन् ।
फ ऐनमा मा अखेयो मुत्तेबअनयो वशरेयो नज़ातुन् ॥

(५) व अस्नैने हुमा ऋक व अतर ना सहीन क अखूवतून् ।
व अस्नात अला अदन् वहोव मश अस्तुन् ॥

अर्थात् "भारत की पवित्र भूमि ! तू सब प्रकार से सम्मान के योग्य है, क्योंकि तुझमें परमात्मा ने अपने सत्य ज्ञान का प्रकाश किया। ये चारों पुस्तकें हमारे मन की आँखों के सामने कितना पवित्र प्रकाश प्रस्तुत करती हैं। यह प्रकाश उषा काल के सुन्दर और शांत तेज के समान है। भारत में परमात्मा ने चारों वेदों का ऋषियों पर प्रकाश किया। साम और यजु वे निधि हैं जिनका ईश्वर ने उपदेश दिया मेरे भाइयों ! इनकी पूजा करो क्योंकि ये हमें मुक्ति का मार्ग बताते हैं। इन चारों वेदों से अन्य दो ऋक और अथर्व हमें विश्व-भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं।"

इन्हीं बातों को लक्ष्य कर राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त को यह लिखना पड़ा—"था हिन्दुओं का शिष्य ईसा यह पता भी है चला ईसाइयों का धर्म बहुधा बौद्ध सांचे में ढला।" —भारत-भारती

नये इस्लामी पैगम्बर मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी जिनके शिष्य लाखों की संख्या में विदेशों में हैं, अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वेद को मूल इलहामी पुस्तक स्वीकार कर लिया था। उनके परम शिष्य माननीय श्री ख्वाजा कमालुद्दीन बार० एट० ला जो लाहौरी अहमदी पार्टी के लीडर थे स्वयं उन्हें "पैगामें सुलह" नामक पुस्तक से प्रकाशित किया, जिसके शब्द ये हैं—

(१) हम खुदा के खौफ से डरते हुये वेद को भी खुदा का इलहाम मानते हैं।

(२) जो सिलसिला वेद से तालीम का कायम हुआ है वह सिलसिला उससे कायम नहीं हो सकता जो किसी मुफ्तरा (झूठे) का कलाम हो।

(३) वेद की तालीम में जो नुकायस नजर आते हैं। वह वेद के नहीं हैं, उसकी तशरीह करने वालों के हैं।

(४) कुरआन में जिस क़दर तालीम है वह ज़रूर वेद के किसी हिस्से में मौजूद है।

(पैगामे सुलह)

प्रसिद्ध जैन आचार्य आचार्य कुमुदेन्द ने अपने जीवन का सार वचन निम्नवत् लिखा है :—

केवल ऋग्वेद ही अनादि और अनन्त है और ईश्वरीय शब्द है। विविध भाषाओं की उत्पत्ति इससे हुई है। सभी भाषाओं के बोलने वालों के लिये ईश्वरीय संदेश एक ही है।

(भूवलय, अध्याय ६)

अमेरिकी योगी सर एन्ड्रू जू जैक्सन डेविस ने स्वामी दयानन्द के भविष्य दर्शन की इस प्रकार खुले शब्दों में घोषणा की है--

"I behold a fire that is universal, the fire is in finite love which burneth to destroy all hate, which dessolveth all things to their purification. Beholding this in finite which is certain to melt the kingdom and Empires and Governmental evils of the whole earth I rejoice exceedingly and take hold of life with an enkindling enthusiason. To restore Premitive Aryan religion to its irst pure state was the fire in the furnace called "Arya Samaj" which started & burnt brightly in the bosom of that "Inspired son of God-in India–Dayanand Saraswati"

(Beyond the Valley, Page 383)

"अर्थात्" मैं एक सर्वव्यापक अग्नि देख रहा हूँ, वह अग्नि निरन्तर प्रेम की है जो समस्त घृणा को भस्मसात् कर समस्त बुराइयों से शुद्ध कर देगी। यह शाश्वत अग्नि देश-देशान्तर में निरन्तर फैलती हुई विश्व की बुराइयों को नष्ट कर देगी। जिसे मैं देख रहा हूँ वह अग्नि समस्त विश्व के मन को प्रदीप्त कर देगी।

आदि प्राचीनतम आर्य (वैदिक) धर्म को उसके पूर्व पुनीत स्थिति में पुनः स्थापित करने के लिए ईश्वर-पुत्र दयानन्द सरस्वती के हृदय से प्रज्वलित हुई है जिन्होंने भारत में आर्यसमाज की स्थापना की है।"

सत्य-सत्य है। सत्यस्वरूप प्रभु की सत्यवाणी वेद की विस्मृत से यह मनुष्य-जाति नाना मत पंथों में विभाजित होकर हिंसा, द्वेष ऊँच-नीच, पाखंड, अंध-विश्वास से ग्रस्त होकर अधोगति को प्राप्त हो रही है। इस मर्म को दयालु दयानन्द ने समझा और 'लौटो वेदों की ओर' दुंदुभि घोष के साथ लोगों का ध्यान वेदों की ओर आकर्षित किया। अन्ततः मनुष्य-जाति को अपनी सुख-शांति एवं शाश्वत कल्याण के लिये वेदों के परम सत्य को स्वीकार करना ही होगा। दूसरा कोई मार्ग नहीं है—'नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाय।'

विश्व-धर्म—वैदिक धर्म की सार्वभौमिक सूक्तियां

तमुस्तवाम य इमा जजान [ऋ० ८/८५/६] उस परमात्मा की स्तुति करें जिसने यह सारी सृष्टि उत्पन्न की है।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम [ऋ० ५/५१/१५] कल्याणकारी मार्ग पर चलो।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् [यजु० ४०/२] कर्म करते हुये जीने की इच्छा करो।

अकर्मा दस्यु [ऋ० १०/२२/८] कर्महीन दस्यु-डकैत हैं।

संगच्छध्वम् [ऋ० १०/१९१/२] मिलकर चलो।

केवलाघो भवति केवलादी [ऋ० १०/११७/३] अकेला खाने वाला पापी होता है।

दुरितानि परासुव, [यजू० ३०/३] दोषों को दूर करो।

उप सर्प माता भूमिम् [ऋ० १०।१८।१०] मातृभूमि की सेवा करो।

वाचं वदत भद्रया [अथर्व० ३।३०।३] सदा कल्याणकारिणी वाणी बोलो।

अभयं मित्रादभयममित्रात् [अ० १९।१५।६] हम मित्र से निर्भय हों और अमित्र से भी।

समानो मन्त्रः समितिः समानी [ऋ० १०।१९१।३] तुम्हारा उद्देश्य और सभा समान हो।

समानो व आकूतिः समाना हृदयानि वः [१०।१९१।४] तुम्हारे विचार और निश्चय एक हों।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम, भद्रं पश्येमाक्षिभिः [यजु० २५।१८] हम कानों से अच्छा सुने और आँखों से अच्छा देखें।

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु [यजु० ३४।१] मेरा मन शुभ विचार वाला हो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो [अ० ३।३०।३] पुत्र पिता के अनुव्रती हों।

शतहस्त समाहर, सहस्र हस्त सं किर [अथर्व]
सैकड़ों हाथ से धन कमा और हजारों हाथ से शुभ कर्मों में धन विखेर।